पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

CC-12 - *"UNITED STATE OF AMERICA-(1860-1990)*

UNIT- III

"Emergence of USA as a world power"

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना
सम्पकक : **9835463960**

डॉ राजेश कुमार
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय,
सम्पकक **9430934482**

"Causes"

इस अध्याय में अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में उदय के कारण की चर्चा की गई है। साथ साथ इस बात का भी वर्णन इस अध्ययन में किया गया है कि किस तरह विभिन्न अमेरिकी राष्ट्रपतियों ने अपनी नीतियों के द्वारा अमेरिका को एक

शक्तिशाली देश के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया और प्रथम विश्व युद्ध में अमेरिका जिस तरह से मित्र राष्ट्रों की ओर से शामिल होकर युद्ध का माहौल एवं उसका पक्ष बदल दिया उससे उसे शक्तिशाली होने का उदाहरण मिलता है

विश्व शक्ति के रूप में अमेरिका का उदय वस्तुत: उसकी भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्रोतों की प्रचुरता, गतिशील व्यापारिक गतिविधियां एवं ऊर्जा का परिणाम था। अमेरिका की गतिशीलता उसी समय से देखने को मिलती है जब इंग्लैंड की पराधीनता को उतार फेंका था और अमेरिकी लोगों में श्रेष्ठा और महानता की भावना जगाई थी। इसने अपनी स्वतंत्रता के पश्चात प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष ढंग से पृथकता की नीति अपनाई थी।जॉन ऐडम्स ने भी इस पृथकता कि नीति का समर्थन करते हुए यह सलाह दी थी कि अमेरिका को यूरोपीय मामलों और युद्ध से अलग रहना चाहिए क्योंकि इससे अमेरिका यूरोपीय मामलों और युद्ध से बचा रह सकता है और अपने स्वतंत्र व्यवहार का भी पालन कर सकता है। इसके बावजूद कालांतर के वर्षों में विश्व में कुछ ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हुई की अमेरिका को विश्व राजनीति का हिस्सा बनना पड़ा।

अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में उदय के पीछे कई कारण कार्य कर रहे थे।19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटेन के साम्राज्यवादी लेखक रुड यार्ड क्रीपलिंग के अंध महाद्वीप अफ्रीका के विस्तृत भू संपदा के रहस्योघाटन और लेखों ने यूरोपीय शक्तियों के बीच एक नई साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा प्रारंभ कर दी थी।अमेरिका में इस हलचल का प्रभाव पड़ना लाजमी था। अब सुरक्षा और शक्ति के विस्तार की आवश्यकतायो या वाध्यताओ से अलग नव साम्राज्यवादी होड. में अमेरिका की भी भाग लेने की दलील वहां के विशिष्ट लोगों के द्वारा दी जाने लगी। 1889 में बेंजामिन हैरिसन ने प्रशांत महासागर में अमेरिका की शक्ति स्थापित करने और इस क्षेत्र को अन्य शक्तियों के हाथ में ना जाने देने का सुझाव दिया । इसी प्रकार पनामा नहर की सुरक्षा के लिए साम्राज्यवादी नीति अपनाने से नही हिचकने की बात भी वहां की जाने लगी। यहां के समाचार पत्रों में भी इस बात पर जोर दिया जाए लगा

कि अमेरिका को साम्राज्यवाद की ओर अपना कदम बढ़ाना चाहिए।ओवर लैंड मंथली के संपादकीय में कहा गया कि महाद्वीप को जितने में आमिरकी लोगों को एक शताब्दी तक पर्याप्त रूप से अपना घर में व्यस्त रखा परंतु अब महादीप जीता जा चुका है। हम अब नए विश्व को जितने की प्रतीक्षा में हैं।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यूरोप की राजनीति एवं आर्थिक व्यवस्था में कई परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव अमेरिका में भी पड़ा। इस समय जर्मनी, इटली,जापान जैसे देशों की शक्ति में तेजी से इजाफा हुआ। इससे इंग्लैंड जो अभी तक सामुद्रिक शक्ति का बादशाह बना हुआ था उसको समुंद्र में चुनौती मिलने शुरू हो गई। इसका सीधा प्रभाव अमेरिका पर भी पड़ा। चूंकि ब्रिटेन और अमेरिका की मित्रता प्रगाढ़ थी और ब्रिटेन द्वारा पश्चिमी गोलार्ध में कोई संकट पैदा ना किए जाने से अमेरिका विश्व राजनीति से अलग रह सकता था । लेकिन अब ऐसी परिस्थितियां नहीं रही।जर्मनी की नाविक शक्ति में जब तेजी से वृद्धि हुआ और सुदूर पूर्व में भी जापान का प्रमुख एशियाई शक्ति के रूप में उदय हुआ तब उसकी एशियाई तथा प्रशांत महासागरीय महत्वकांक्षाए अमेरिका को भविष्य में एक खतरे का संकेत देने लगी थी। इन प्रश्नों के उत्पन्न होने के कारण अमेरिका भी प्रशांत महासागर में अपने सुरक्षा केंद्रों की स्थापना और सुदूर पूर्व राजनीति में विशेष भूमिका के लिए प्रेरित हुआ ताकि विश्व में शक्ति संतुलन बना रह सके।

अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में उदय का एक अन्य प्रमुख कारण अमेरिका में हुई औद्योगिक प्रगति को भी माना जाता है। अमेरिकी गृह युद्ध के पश्चात अमेरिका में तेजी से औद्योगिक विकास हुआ परंतु इसका एक नकारात्मक परिणाम यह भी हुआ कि अनावश्यक अतिरिक्त उत्पादन और असंतुलित आर्थिक व्यवहार ने जो आसमान आर्थिक प्रगति की उसने अनावृष्टि, सूखे, अकाल, भयानक आंधियों, और कीट आतंक जैसे प्राकृतिक संकट और अंतरराष्ट्रीय बाजार के उतार-चढ़ाव की अनिश्चितता से जुड़ी अनेक घरेलू संकट पैदा किया। इसके परिणाम स्वरूप अमेरिका में श्रमिक आंदोलन, किसान विद्रोह और

मुद्रा संकट के अतिरिक्त वस्तुओं की कमी होने से उनके मूल्यों में लगातार आने वाली गिरावट और आर्थिक मंदी ने अमेरिकी राजनीतिज्ञ और सरकार को जनता का ध्यान ऐसे अंतरराष्ट्रीय विषय की ओर केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया जिसमें अधिकांश लोग लाभ की आशा करते हैं और जो उनकी परंपरागत गौरव की भावना को तुष्टि प्रदान कर सकता। उद्योगपतियों ने भी सरकार पर दबाव डालना शुरू कर दिया ताकि वे अपने माल को विश्व बाजार में सुगमता से बेच सकें। इसके कारण अमेरिकी सरकार भी साम्राज्यवादी नीति अपनाने को विवश हुई।

अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में उदय का एक अन्य प्रमुख कारण नौसेना में तेजी से विकास को भी माना जाता है। शुरुआती दौर में अमेरिकी नौसेना काफी कमजोर मानी जाती थी लेकिन जब पनामा नहर के निर्माण के प्रश्न पर इंग्लैंड से हुई क्षणिक विवाद एवं जर्मनी की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति से चिंतित होकर अमेरिका भी 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में अपने नौसेना के विकास एवं संगठित करने का प्रयास शुरू कर दिया। 1881 में युद्ध पोतों के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया 1890 में "नेवल पॉलिसी बोर्ड" का गठन किया गया। इसके कारण 1898 ईस्वी तक विश्व की प्रमुख नौसैनिक शक्तियों में अमेरिका पांचवें स्थान पर तथा 1900 ईसवी तक तीसरे स्थान पर पहुंच गया । सैनिक शक्ति का सीधा संबंध नए-नए नौसैनिक अड्डे की स्थापना या उन पर नियंत्रण प्राप्त करने से था। फिलीपाइनस और हवाई द्वीप पर अधिकार किया जाना इसी का परिणाम था।

अमेरिकी साम्राज्यवाद और विश्व शक्ति के रूप में अमेरिका के उदय में 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में प्रतिपादित नई मेनिफेस्ट डेस्टिनी के सिद्धांत ने विशेष भूमिका निभाई। इसके परिणाम स्वरूप अमेरिका की व्यवहारिक आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं ने तूल पकड़ा। 19वीं सदी में उनकी इस भावना को बल देने में सामाजिक डार्विनवाद का प्रमुख हाथ था जिसके अनुसार वही प्रजाति विश्व का नेतृत्व और उस पर नियंत्रण रखने में सफल होती है जिसने आधुनिक काल की

प्रवृतियां को ठीक से समझा हो और जिसने एक ऐसी सभ्यता का निर्माण किया हो जो पुरातन और समाप्त हो रही सभ्यताओं को विस्थापित करने की सामर्थ्य रखती हो।

प्रजातिगत महानता,नवीन सभ्यता के निर्माण और विस्तार की भावना ने भी अमेरिका को विश्व शक्ति के रूप में उदय में प्रमुख भूमिका निभाई। ब्रिटिश-अमेरिकी लोग यह मानते थे कि वे लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्थापित किए हैं और इसे पूरे विश्व में लागू करना है। उस समय के दार्शनिक भी इस बात पर जोर दे रहे थे। जोसिया स्ट्रॉन्ग ने 1855 ईसवी में "our country" नामक किताब को प्रकाशित कर इस बात पर जोर दिया कि anglo-saksno के हाथो में मनुष्य मात्र की नीति है और United states को ही इस प्रजाति का घर, इसकी शक्ति का प्रधान आधार और इसके प्रभाव का महान केंद्र बनाना था। इसने यह भी नारा दिया कि जैसे अमेरिका चलेगा वैसा ही दुनिया चलेगी।

राष्ट्रीय सम्मान और आदर की भावना का प्रबल होना भी अमेरिका को विश्व शक्ति के रूप में उदय होने का मार्ग प्रशस्त किया। यह सही है कि साम्राज्यवादी देश का उद्देश्य भले ही एक न रहा हो लेकिन वे सभी देश की प्रतिष्ठा और प्रभाव को बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। वे मात्र आर्थिक लाभ से प्रेरित नहीं थे बल्कि F.R. Dulles के अनुसार "वे अमेरिका को एक व्यापारियों और निर्माताओं कि देश से अधिक कुछ और देखना चाहते थे और रुजवेल्ट जैसे लोगों के लिए ऐसे किसी चीज के लिए जो भौतिक लाभ से परे हो, युद्ध करना भी बुरा नहीं था। इनका यह भी कहना था कि हम अपने देश को अपने भूत से भी महान बनाने पर तुले हैं, देशों में हमारा स्थान महान होना चाहिए, या तो हमे महान असफलता मिलेगी यह महान सफलता।

इस तरह अमेरिका सर्वप्रथम कृषि एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम किया और अपनी स्थिति को मजबूत किया।इसने विश्व की परिस्थिियों को समझते हुए तथा अपने

हितों को देखते हुए विश्व की राजनीति में दखल देना शुरू किया और यह अपने आपको एक महत्पूर्ण देश के रूप में स्थापित किया।